International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीकों का प्रतिमानात्मक अध्ययन

जितेंद्र मछिंद्रनाथ थोरात[1], डॉ सोनल भारद्वाज[2]

[1]शोध छात्र, ललित कला विभाग, नंदलाल बोस सुभारती कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड फैशन डिजाइन, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोध निर्देशक, ललित कला विभाग, नंदलाल बोस सुभारती कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड फैशन डिजाइन, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारतीय लघु चित्रकला की परंपरा विश्व कला इतिहास में अपनी सूक्ष्मता, भावप्रवणता और प्रतीकात्मक गहराई के लिए विशिष्ट स्थान रखती है। विशेष रूप से राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी शैलियों में मानव भावनाओं का अत्यंत सूक्ष्म और सौंदर्यात्मक चित्रण देखने को मिलता है। इन चित्रकला परंपराओं में "संयोग–श्रृंगार" अर्थात प्रेमी–प्रेमिका के मिलन की अवस्था को दृश्य प्रतीकों, रंग–योजनाओं, प्रकृति–चित्रण तथा मानवीय भंगिमाओं के माध्यम से अत्यंत कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। भारतीय सौंदर्यशास्त्र में श्रृंगार रस को रसों का राजा माना गया है, जिसमें संयोग और वियोग दोनों अवस्थाएँ शामिल हैं **(Coormaraswamy, 2004)**। लघु चित्रकला में यह भाव न केवल कथा–चित्रण का हिस्सा है, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी बन जाता है।

राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी चित्रशैलियों में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति शैलीगत भिन्नताओं के बावजूद एक समान सौंदर्य–बोध को प्रकट करती है। जहाँ राजस्थानी चित्रकला में राधा–कृष्ण की भक्ति–प्रेम परंपरा और लोक–रंगों का प्रभाव दिखाई देता है, वहीं मुगल चित्रकला में दरबारी जीवन, यथार्थवाद और संरचित सौंदर्य की प्रधानता मिलती है। पहाड़ी चित्रकला में प्रकृति और भक्ति–भाव के साथ प्रेम की कोमल और काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से उभरती है। इन तीनों परंपराओं में दृश्य प्रतीकों का प्रयोग केवल सजावटी तत्व नहीं है, बल्कि भावात्मक संप्रेषण का सशक्त माध्यम है **(Beach, 2011)**।

यह अध्ययन इन चित्रशैलियों में प्रयुक्त संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीकों का प्रतिमानात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे यह समझा जा सके कि भारतीय कला परंपरा में प्रेम और सौंदर्य की अवधारणा किस प्रकार विविध रूपों में विकसित हुई है।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारतीय कला परंपरा में लघु चित्रकला का विकास मुख्यतः मध्यकालीन शासकीय संरचनाओं, धार्मिक आंदोलनों और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के परिणामस्वरूप हुआ। मुगल काल में फारसी–भारतीय कला का समन्वय देखने को मिलता है, जिसने चित्रकला में यथार्थवाद और सूक्ष्मता को नई दिशा दी **(Welch, 1976)**। इसके विपरीत राजस्थानी चित्रकला राजपूत दरबारों और भक्ति आंदोलन से प्रभावित रही, जिसमें प्रेम और भक्ति का मिश्रित रूप प्रमुख रूप से उभरता है। पहाड़ी चित्रकला विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों में विकसित हुई, जिसमें कांगड़ा शैली ने प्रेम और प्रकृति के सौंदर्य को अत्यंत कोमल और काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया **(Goswamy, 1999)**।

इन तीनों शैलियों में "संयोग–श्रृंगार" की अभिव्यक्ति केवल सौंदर्यात्मक नहीं बल्कि दार्शनिक भी है, जो मानव जीवन में प्रेम, मिलन और आध्यात्मिक एकता के विचार को दर्शाती है। दृश्य प्रतीकों जैसे कमल, चंद्रमा, उद्यान, नायक–नायिका की दृष्टि और शरीर–भंगिमा के माध्यम से कलाकारों ने भावनाओं को प्रतीकात्मक रूप दिया। यह प्रतीकात्मकता

भारतीय सौंदर्यशास्त्र के रस सिद्धांत और ध्वनि सिद्धांत से गहराई से जुड़ी हुई है, जिसमें कला को भाव–संप्रेषण का माध्यम माना गया है **(Fischer & Goswamy, 2014)**।

1.2 शोध समस्या का प्रतिपादन

भारतीय लघु चित्रकला की राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी शैलियाँ अपनी–अपनी सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण विशिष्ट पहचान रखती हैं, परंतु इन तीनों परंपराओं में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति में प्रयुक्त दृश्य प्रतीकों का तुलनात्मक और प्रतिमानात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। अधिकांश अध्ययन या तो शैली–विशेष तक सीमित रहे हैं या केवल ऐतिहासिक एवं तकनीकी पहलुओं पर केंद्रित रहे हैं, जबकि प्रतीकात्मक संरचना और भावात्मक संप्रेषण के स्तर पर इन शैलियों के बीच समानताओं एवं भिन्नताओं का व्यवस्थित अध्ययन अनुपस्थित प्रतीत होता है। इसलिए यह शोध यह समस्या उठाता है कि इन तीनों चित्रकला परंपराओं में संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीकों का प्रतिमानात्मक स्वरूप क्या है और यह किस प्रकार सांस्कृतिक एवं सौंदर्यात्मक अर्थों को प्रकट करता है।

1.3 शोध के उद्देश्य

- राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अवधारणा का अध्ययन करना।
- इन तीनों चित्रशैलियों में प्रयुक्त दृश्य प्रतीकों की पहचान करना।
- संयोग–श्रृंगार के प्रतीकों का प्रतिमानात्मक विश्लेषण करना।
- तीनों शैलियों में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति की समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- भारतीय सौंदर्यशास्त्र के संदर्भ में संयोग–श्रृंगार की सांस्कृतिक और दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करना।

1.4 शोध प्रश्न

- राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति कैसे की गई है?
- इन चित्रशैलियों में कौन–कौन से प्रमुख दृश्य प्रतीक उपयोग किए गए हैं?
- संयोग–श्रृंगार के प्रतीकों में कौन–सी समानताएँ और भिन्नताएँ पाई जाती हैं?
- क्या इन प्रतीकों का संबंध भारतीय सौंदर्यशास्त्र के रस सिद्धांत से है?
- विभिन्न चित्रशैलियों में प्रतीकात्मकता का सांस्कृतिक महत्व क्या है?

1.5 शोध का महत्व

- यह अध्ययन भारतीय लघु चित्रकला की प्रतीकात्मक समझ को गहराई प्रदान करता है।
- यह राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी शैलियों के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायक है।
- यह भारतीय सौंदर्यशास्त्र और दृश्य संस्कृति के अध्ययन में योगदान देता है।
- यह कला इतिहास, संस्कृति अध्ययन और दृश्य संचार के शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है।
- यह संयोग–श्रृंगार जैसे भाव की प्रतीकात्मक व्याख्या को अकादमिक रूप से स्थापित करता है।

1.6 शोध की सीमा एवं परिसीमन

- यह अध्ययन केवल राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला तक सीमित है।
- शोध मुख्यतः संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीकों के विश्लेषण पर केंद्रित है।
- अध्ययन में चयनित प्रतिनिधि चित्रों का ही विश्लेषण किया गया है, सभी उपलब्ध चित्रों का नहीं।
- यह शोध ऐतिहासिक व्याख्या की तुलना में प्रतीकात्मक और सौंदर्यात्मक विश्लेषण पर अधिक केंद्रित है।
- उपलब्ध साहित्य एवं डिजिटल स्रोतों की सीमाओं के कारण कुछ क्षेत्रीय विविधताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन संभव नहीं हो सका।

2. शोध पद्धति

यह शोध राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीकों के प्रतिमानात्मक अध्ययन पर आधारित है। अध्ययन में गुणात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण अपनाया गया है, क्योंकि यह विषय भावनात्मक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक अर्थों की व्याख्या से संबंधित है, जिन्हें मात्रात्मक विधियों द्वारा पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता। शोध में कला इतिहास, सौंदर्यशास्त्र तथा दृश्य अध्ययन के सिद्धांतों का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत चित्रों के विश्लेषण हेतु प्रतीकात्मक व्याख्या, तुलनात्मक अध्ययन तथा प्रतिमानात्मक विश्लेषण को मुख्य उपकरण के रूप में अपनाया गया है।

2.1 गुणात्मक एवं प्रतिमानात्मक अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक रूप से अर्थ, प्रतीक और सांस्कृतिक संदर्भों की व्याख्या की जाती है। गुणात्मक पद्धति का मुख्य उद्देश्य घटनाओं या कलाकृतियों के गहरे अर्थों को समझना होता है, न कि उन्हें संख्यात्मक रूप में मापना **(Denzin & Lincoln, 2018)**। इस शोध में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति को एक सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक संरचना के रूप में देखा गया है।

प्रतिमानात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत विभिन्न चित्रकला शैलियों में प्रयुक्त प्रतीकों के स्थायी और आवर्ती पैटर्न का विश्लेषण किया गया है। यह दृष्टिकोण यह समझने में सहायक है कि अलग–अलग शैलियों में समान भावनाएँ किन–किन प्रतीकात्मक रूपों में अभिव्यक्त होती हैं और उनके बीच क्या संरचनात्मक समानताएँ एवं भिन्नताएँ हैं। यह पद्धति संरचनावादी दृष्टिकोण से भी प्रभावित है, जिसमें अर्थ को प्रतीकों के संबंधों के माध्यम से समझा जाता है।

2.2 दृश्य एवं प्रतीकात्मक विश्लेषण

इस शोध में दृश्य विश्लेषण को मुख्य उपकरण के रूप में अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत चित्रों के रंग, रेखा, संरचना, परिप्रेक्ष्य और विषय–वस्तु का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। दृश्य विश्लेषण यह समझने में सहायता करता है कि कलाकार ने किस प्रकार दृश्य तत्वों के माध्यम से भावनाओं और कथाओं को प्रस्तुत किया है।

प्रतीकात्मक विश्लेषण के माध्यम से उन सांस्कृतिक और दार्शनिक प्रतीकों की व्याख्या की गई है जो संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति में प्रयुक्त होते हैं, जैसे कमल, चंद्रमा, उद्यान, जल, नायक–नायिका की दृष्टि, तथा शरीर–भंगिमाएँ। ये प्रतीक केवल दृश्य अलंकरण नहीं हैं, बल्कि गहरे भावात्मक और आध्यात्मिक अर्थों को संप्रेषित करते हैं **(Panofsky, 1955)**। इस प्रक्रिया में यह भी देखा गया है कि विभिन्न चित्रशैलियों में एक ही प्रतीक किस प्रकार भिन्न संदर्भों में अर्थ ग्रहण करता है।

2.3 चयनित चित्रों का आधार

इस शोध में विश्लेषण हेतु चयनित चित्रों का आधार प्रतिनिधित्वात्मक पद्धति पर रखा गया है। चयन इस प्रकार किया गया है कि प्रत्येक चित्रकला शैलीकृराजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ीकृसे ऐसे उदाहरण लिए जाएँ जो संयोग–श्रृंगार की स्पष्ट और प्रामाणिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हों।

चित्रों के चयन में निम्न मानदंड अपनाए गए हैं:

- चित्र का विषय स्पष्ट रूप से संयोग–श्रृंगार से संबंधित हो।
- चित्र संबंधित शैली (राजस्थानी, मुगल या पहाड़ी) की विशिष्ट विशेषताओं को प्रदर्शित करता हो।
- चित्र ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से मान्य एवं प्रामाणिक स्रोतों से लिया गया हो।
- चित्र में दृश्य प्रतीकों की उपस्थिति स्पष्ट और विश्लेषण योग्य हो।
- चित्र संग्रहालयों, शोध ग्रंथों तथा विश्वसनीय डिजिटल आर्काइव्स से प्राप्त किया गया हो ।

3. संयोग–श्रृंगार की अवधारणा

भारतीय सौंदर्यशास्त्र में "श्रृंगार रस" को रस सिद्धांत का सबसे प्रमुख और प्रभावशाली रस माना गया है, जिसमें मानवीय भावनाओं के अंतर्गत प्रेम, आकर्षण, सौंदर्य और मिलन की अवस्थाओं का सूक्ष्म चित्रण होता है। संयोग–श्रृंगार

विशेष रूप से प्रेमी–प्रेमिका के मिलन, निकटता और भावनात्मक एकता की अवस्था को व्यक्त करता है। यह केवल भौतिक मिलन का चित्रण नहीं है, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और कभी–कभी आध्यात्मिक एकता का भी प्रतीक है। संस्कृत काव्यशास्त्र में यह माना गया है कि श्रृंगार रस मानव जीवन की सबसे कोमल और आनंददायक अनुभूति है, जो कला, साहित्य और चित्रकला में विविध रूपों में अभिव्यक्त होती है **(Bharata, 2000)**।

लघु चित्रकला परंपरा में संयोग–श्रृंगार केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक सौंदर्यात्मक दर्शन के रूप में विकसित हुआ है। इसमें नायक–नायिका की भंगिमाएँ, दृष्टि–संवाद, प्रकृति का सह–अस्तित्व और रंगों की कोमलता के माध्यम से प्रेम की सूक्ष्म अभिव्यक्ति की जाती है। यह अवधारणा भारतीय कला में "रसानुभूति" की परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है, जिसमें दर्शक केवल चित्र को देखता नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से उसका अनुभव करता है **(Coomaraswamy, 2004)**।

3.1 भारतीय काव्यशास्त्र में संयोग–श्रृंगार

भारतीय काव्यशास्त्र में संयोग–श्रृंगार का आधार नाट्यशास्त्र और रस सिद्धांत में मिलता है, जिसे आचार्य भरत मुनि ने व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। श्रृंगार रस को "रसराज" कहा गया है, क्योंकि यह मानव मन की सबसे सूक्ष्म और आनंददायक भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। संयोग–श्रृंगार उस अवस्था को दर्शाता है जब नायक और नायिका एक–दूसरे के साथ मिलन, प्रेम–संवाद और सौंदर्यात्मक निकटता का अनुभव करते हैं।

आनंदवर्धन और अभिनवगुप्त जैसे आचार्यों ने श्रृंगार रस को और अधिक दार्शनिक रूप प्रदान किया, जिसमें प्रेम को केवल व्यक्तिगत अनुभव न मानकर एक सार्वभौमिक सौंदर्य चेतना के रूप में देखा गया। संयोग–श्रृंगार में दृष्टि, स्मृति, प्रतीक्षा और मिलन जैसे भावों का संतुलित संयोजन होता है, जो काव्य और कला दोनों में अभिव्यक्त होता है **(Raghavan, 1973)**। यह सिद्धांत बाद में चित्रकला में भी प्रतिबिंबित हुआ, जहाँ प्रेम को दृश्य प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा।

3.2 लघु चित्रकला में प्रेम, मिलन और सौंदर्य–बोध

लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति अत्यंत सूक्ष्म और प्रतीकात्मक रूप में दिखाई देती है। कलाकारों ने प्रेम, मिलन और सौंदर्य को केवल कथात्मक रूप में नहीं, बल्कि दृश्य संरचना और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। राजस्थानी चित्रकला में यह प्रेम भक्ति और लोक–संस्कृति से जुड़ा हुआ है, जहाँ राधा–कृष्ण की लीला प्रेम के दिव्य रूप को दर्शाती है। मुगल चित्रकला में यह प्रेम अधिक यथार्थवादी और दरबारी सौंदर्य के रूप में प्रकट होता है, जहाँ नायक–नायिका का संबंध संरचित और नियंत्रित सौंदर्यबोध से जुड़ा होता है। वहीं पहाड़ी चित्रकला में प्रेम को प्रकृति के साथ एकात्म रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो अत्यंत कोमल और भावनात्मक होता है **(Beach, 2011)**।



चित्र 1: राजकुमार दारा शिकोह अपनी प्रेयसी राणादिल के साथ

स्रोतः मुगल काल से संबंधित, लगभग 1700 ई., कागज पर निर्मित, 34.26 सेमी, पंजीकरण संख्या 58.27/16

इन चित्रशैलियों में सौंदर्य–बोध केवल दृश्य आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दर्शक को एक भावात्मक अनुभव प्रदान करता है। रंगों का चयन, रेखाओं की कोमलता, प्रकृति के तत्व और पात्रों की भंगिमाएँ मिलकर एक ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं जो संयोग–श्रृंगार की भावना को जीवंत कर देता है। इस प्रकार लघु चित्रकला में प्रेम केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक गहन सौंदर्यात्मक अनुभव बन जाता है।

4. राजस्थानी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार

राजस्थानी लघु चित्रकला भारतीय चित्रकला परंपरा की एक अत्यंत समृद्ध और भावप्रवण शैली है, जिसमें संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति विशेष रूप से राधा–कृष्ण की लीला और नायक–नायिका परंपरा के माध्यम से दिखाई देती है। इस शैली में प्रेम केवल मानवीय संबंध नहीं, बल्कि भक्ति और आध्यात्मिक अनुभूति का भी प्रतीक है। राजस्थानी चित्रकला में संयोग–श्रृंगार को प्रकृति, रंगों और प्रतीकात्मक संरचनाओं के माध्यम से अत्यंत सौंदर्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे दर्शक भावनात्मक रूप से चित्र से जुड़ जाता है **(Sundar, 2003)**।



चित्र 2: बीमार नायिका से प्रेम

स्रोतः कोटा, राजस्थान, लगभग 1770 ई., कागज पर, 31 × 22 सेमी, अभिग्रहण संख्या 56

राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न उपशैलियाँकृमेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा और किशनगढ़कृसंयोग–श्रृंगार की भिन्न–भिन्न अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत करती हैं। किशनगढ़ शैली विशेष रूप से "बनी–ठनी" और राधा–कृष्ण की कोमल, आदर्शीकृत प्रेमाभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ प्रेम को अत्यंत सूक्ष्म और अलंकारिक रूप में दर्शाया गया है **(Chaitanya, 1982)**।

4.1 राधा–कृष्ण एवं नायक–नायिका प्रसंग

राजस्थानी चित्रकला में संयोग–श्रृंगार का सबसे प्रमुख स्रोत राधा–कृष्ण की प्रेम–लीला है। यह संबंध केवल लौकिक प्रेम का प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का दार्शनिक रूप भी है। राधा–कृष्ण की विभिन्न मुद्राएँकृ जैसे मिलन, संवाद, रासलीला और प्रतीक्षाकृसंयोग–श्रृंगार के विभिन्न भावों को व्यक्त करती हैं।

इसके अतिरिक्त नायक–नायिका परंपरा में श्रृंगार रस की आठ नायिकाओं (अष्टनायिका) का चित्रण भी मिलता है, जिसमें वियोग, मिलन और प्रतीक्षा की अवस्थाएँ अत्यंत सूक्ष्मता से दर्शाई जाती हैं। इन प्रसंगों में मानवीय भावनाओं की गहराई को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे चित्र केवल दृश्य न रहकर भावात्मक अनुभव बन जाता है।

4.2 रंग, प्रकृति और भावाभिव्यक्ति

राजस्थानी लघु चित्रकला में रंगों का प्रयोग अत्यंत प्रतीकात्मक और भावात्मक होता है। लाल, पीला, नीला और हरा

जैसे प्रमुख रंग प्रेम, ऊर्जा, दिव्यता और प्रकृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। संयोग–श्रृंगार के चित्रों में विशेष रूप से गर्म रंगों का उपयोग भावनात्मक तीव्रता और प्रेम की गहराई को दर्शाने के लिए किया जाता है।

प्रकृति का चित्रणकृजैसे पेड़, फूल, झीलें, चंद्रमा और रात्रि का वातावरणकृप्रेम के भाव को और अधिक काव्यात्मक बनाता है। विशेष रूप से रात्रि और चंद्रमा का संयोजन संयोग–श्रृंगार की कोमलता और रहस्यमयता को बढ़ाता है। इस प्रकार प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि भावनात्मक सहचर के रूप में कार्य करती है **(Goswamy, 1999)**।

4.3 दृश्य प्रतीकों का विश्लेषण

राजस्थानी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति विभिन्न दृश्य प्रतीकों के माध्यम से की जाती है। इन प्रतीकों में कमल, चंद्रमा, वृक्ष, उद्यान, जलाशय, पक्षी और नायक–नायिका की दृष्टि–संवाद प्रमुख हैं। ये प्रतीक केवल सजावटी तत्व नहीं हैं, बल्कि गहरे भावात्मक और दार्शनिक अर्थ रखते हैं।

उदाहरण के लिए, कमल पवित्रता और प्रेम की शुद्धता का प्रतीक है, जबकि चंद्रमा शांति और सौम्यता का प्रतीक माना जाता है। नायक–नायिका की दृष्टि–संवाद प्रेम की आंतरिक अनुभूति को दर्शाता है, जो बिना शब्दों के भावनाओं का संप्रेषण करता है। इसी प्रकार, उद्यान और प्राकृतिक परिवेश प्रेम के लिए एक आदर्श वातावरण निर्मित करते हैं, जो संयोग–श्रृंगार की भावनात्मक गहराई को बढ़ाता है।

इस प्रकार राजस्थानी चित्रकला में दृश्य प्रतीकों का प्रयोग एक जटिल प्रतीकात्मक संरचना के रूप में होता है, जो प्रेम, भक्ति और सौंदर्य के बहुस्तरीय अर्थों को व्यक्त करता है।

5. मुगल लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार

मुगल लघु चित्रकला भारतीय कला परंपरा में एक अत्यंत परिष्कृत, यथार्थवादी और दरबारी सौंदर्य से युक्त शैली के रूप में विकसित हुई। इस शैली में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत नियंत्रित, संतुलित और संरचनात्मक रूप में दिखाई देती है। जहाँ राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में प्रेम अधिक भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप में प्रस्तुत होता है, वहीं मुगल चित्रकला में यह प्रेम दरबारी संस्कृति, शाही अनुशासन और सौंदर्यात्मक शिष्टता के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है **(Beach, 2011)**।

मुगल चित्रकला में संयोग–श्रृंगार का उद्देश्य केवल प्रेम का चित्रण नहीं, बल्कि शक्ति, सौंदर्य और संस्कृति के संतुलन को दर्शाना भी है। इस शैली में कलाकारों ने मानवीय भावनाओं को यथार्थवादी शैली में प्रस्तुत करते हुए दृश्य संरचना, स्थापत्य और परिधान के माध्यम से प्रेम और आकर्षण को एक उच्च स्तरीय सौंदर्यबोध प्रदान किया है **(Welch, 1976)**।

5.1 दरबारी प्रेम और सौंदर्य का चित्रण

मुगल चित्रकला में संयोग–श्रृंगार का प्रमुख स्वरूप दरबारी प्रेम के चित्रण में दिखाई देता है, जहाँ शाही जीवन, नृत्य–संगीत, और औपचारिक प्रेम संबंधों को अत्यंत शालीनता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ प्रेम का स्वरूप व्यक्तिगत भावनाओं से अधिक सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना के भीतर सीमित रहता है।

दरबारी प्रेम के चित्रों में नायक–नायिका को अक्सर बगीचों, महलों या शाही उद्यानों में दर्शाया जाता है, जहाँ उनका संबंध सौंदर्य और अनुशासन के बीच संतुलित दिखाई देता है। यह प्रेम आदर्शीकृत होते हुए भी यथार्थवादी अभिव्यक्ति से युक्त होता है, जिसमें चेहरे के भाव, मुद्राएँ और परिवेश अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किए जाते हैं। मुगल कला में सौंदर्य को नियंत्रित और परिष्कृत रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो शाही संस्कृति की गरिमा को दर्शाता है।

5.2 यथार्थवाद, स्थापत्य और परिधान प्रतीक

मुगल लघु चित्रकला की सबसे प्रमुख विशेषता उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण है। इस शैली में मानव आकृतियों, पशु–पक्षियों और प्रकृति का अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थपूर्ण चित्रण किया गया है। संयोग–श्रृंगार के संदर्भ में यह यथार्थवाद प्रेम की अभिव्यक्ति को अधिक विश्वसनीय और दृश्यात्मक रूप से प्रभावी बनाता है।

स्थापत्य इस शैली में एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक तत्व है। महल, बगीचे, झरोखे और गुंबद प्रेम के लिए संरचित और नियंत्रित वातावरण का निर्माण करते हैं। विशेष रूप से चारबाग शैली का उद्यान प्रेम और सौंदर्य की पूर्णता का प्रतीक

माना जाता है, जहाँ प्रकृति और मानव सौंदर्य एक संतुलित संरचना में दिखाई देते हैं।
परिधान और आभूषण भी संयोग–श्रृंगार के प्रतीकात्मक तत्व हैं। शाही वस्त्रों की बारीकी, आभूषणों की समृद्धि और कपड़ों की बनावट सामाजिक स्थिति और सौंदर्यबोध को दर्शाती है। यह सभी तत्व मिलकर प्रेम को एक शाही और संरचित सौंदर्यात्मक अनुभव में परिवर्तित करते हैं **(Losty, 2010)**।

5.3 दृश्य प्रतीकों का विश्लेषण

मुगल चित्रकला में संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीक अत्यंत सूक्ष्म, संरचित और अर्थपूर्ण होते हैं। इनमें बगीचा (बिंतइंही), जल स्रोत, झरोखा, महल की दीवारें, फूलों की सजावट, और नियंत्रित प्राकृतिक दृश्य प्रमुख हैं। ये सभी प्रतीक प्रेम को एक संगठित और नियंत्रित वातावरण में प्रस्तुत करते हैं।
जल और बगीचे का प्रतीक विशेष रूप से जीवन, प्रेम और शांति का संकेत देता है। झरोखा और दरबार प्रेम के सामाजिक संदर्भ को दर्शाते हैं, जहाँ भावनाएँ निजी होते हुए भी सार्वजनिक संरचना के भीतर अभिव्यक्त होती हैं। नायक–नायिका की मुद्राएँ और दृष्टि–संवाद इस शैली में संयमित होते हैं, जो भावनाओं की गहराई को सूक्ष्म रूप से व्यक्त करते हैं।
इस प्रकार मुगल चित्रकला में संयोग–श्रृंगार केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और संरचनात्मक सौंदर्य व्यवस्था के रूप में विकसित होता है, जिसमें प्रेम, शक्ति और अनुशासन का संतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

6. पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार

पहाड़ी लघु चित्रकला भारतीय कला परंपरा की एक अत्यंत काव्यात्मक, भावनात्मक और प्रकृति–आधारित शैली है, जिसका विकास मुख्यतः हिमालयी क्षेत्रोंकृकांगड़ा, गढ़वाल, बसोहली और चंबाकृमें हुआ। इस शैली में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति अत्यंत कोमल, भावप्रवण और आध्यात्मिक स्वरूप में दिखाई देती है। यहाँ प्रेम केवल मानवीय संबंध नहीं, बल्कि भक्ति और प्रकृति के साथ एकात्मता का प्रतीक भी बन जाता है। विशेष रूप से कांगड़ा शैली में राधा–कृष्ण के प्रेम प्रसंगों को अत्यंत सूक्ष्म और काव्यात्मक रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें भावनाओं की गहराई और सौंदर्य की कोमलता प्रमुख होती है **(Goswamy, 1999)**।



चित्र 3: वासकसज्जा–नायिका', लगभग 1800 ई., कागज पर, 27 × 18.5 सेमी, खाता संख्या 49.19/15/25

ओरछा के प्रसिद्ध मध्यकालीन दरबारी कवि केशवदास ने अपनी लंबी कथात्मक कविता रसिकप्रिया में विभिन्न प्रकार की नायिकाओं का वर्णन किया है। उन्होंने वासकसज्जा नायिका का ऐसा चित्रण किया है जो मिलन के लिए अपने पलंग को फूलों से सजाती है और अपने स्वामी के आगमन की बेसब्री से प्रतीक्षा करती है।

पहाड़ी चित्रकला में संयोग–श्रृंगार प्रकृति के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। पर्वत, वन, नदियाँ, पुष्प और ऋतु परिवर्तन केवल पृष्ठभूमि नहीं हैं, बल्कि प्रेम की भावनात्मक अभिव्यक्ति के सक्रिय सहभागी हैं। इस शैली में रंगों का प्रयोग अत्यंत सौम्य और प्राकृतिक होता है, जो प्रेम की कोमलता और आध्यात्मिकता को और अधिक प्रभावशाली बनाता है **(Archer, 1973)**।

6.1 भक्ति, प्रेम और प्रकृति का समन्वय

पहाड़ी लघु चित्रकला में भक्ति और प्रेम का समन्वय एक अद्वितीय सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यहाँ राधा–कृष्ण का प्रेम केवल सांसारिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एकता का प्रतीक है। यह प्रेम भक्ति आंदोलन की परंपरा से गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसमें ईश्वर और भक्त के बीच आत्मिक संबंध को प्रेम के रूप में देखा जाता है।

प्रकृति इस शैली में एक जीवंत पात्र के रूप में कार्य करती है, जो प्रेम की भावनाओं को और अधिक गहराई प्रदान करती है। पर्वतों की शांति, नदियों की कोमलता और फूलों की सुंदरता मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जिसमें संयोग–श्रृंगार एक दिव्य अनुभव में परिवर्तित हो जाता है। यह समन्वय भारतीय सौंदर्यशास्त्र के उस विचार को दर्शाता है जिसमें कला को आध्यात्मिक अनुभव का माध्यम माना गया है **(Coomaraswamy, 2004)**।

6.2 राधा–कृष्ण मिलन और रसमय वातावरण

पहाड़ी चित्रकला में राधा–कृष्ण का मिलन संयोग–श्रृंगार का सबसे प्रमुख विषय है। यह मिलन अत्यंत कोमल, भावनात्मक और काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कांगड़ा शैली में विशेष रूप से राधा और कृष्ण के बीच की दृष्टि, मुद्रा और निकटता को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है, जिससे प्रेम की गहराई स्पष्ट होती है।

इस शैली में वातावरण को "रसपूर्ण" बनाने के लिए प्राकृतिक तत्वों का अत्यधिक उपयोग किया जाता है। रात्रि का चाँद, पुष्पों की सुगंध, वन की शांति और जल की कोमल ध्वनि मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जो दर्शक को भावनात्मक रूप से चित्र में समाहित कर देता है। यह रसमय वातावरण संयोग–श्रृंगार को केवल दृश्य अनुभव नहीं रहने देता, बल्कि एक आंतरिक भावानुभूति में बदल देता है **(Archer, 1973)**।

6.3 दृश्य प्रतीकों का विश्लेषण

पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीक अत्यंत काव्यात्मक और प्रकृति–आधारित होते हैं। इनमें राधा–कृष्ण की दृष्टि–संवाद, वन, पर्वत, यमुना नदी, कमल, मोर, पुष्प और चंद्रमा प्रमुख प्रतीकात्मक तत्व हैं। ये प्रतीक केवल सौंदर्य वृद्धि के लिए नहीं, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक अर्थों को व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

मोर प्रेम और विरह दोनों भावों का प्रतीक है, जबकि चंद्रमा शांति, सौम्यता और प्रेम की कोमलता का प्रतिनिधित्व करता है। वन और पर्वत प्रेम के लिए एक निजी और सुरक्षित स्थान का निर्माण करते हैं, जहाँ राधा–कृष्ण का मिलन एक दिव्य अनुभव के रूप में प्रस्तुत होता है। यमुना नदी जीवन और प्रवाह का प्रतीक है, जो प्रेम की निरंतरता को दर्शाती है।

इस प्रकार पहाड़ी चित्रकला में दृश्य प्रतीक एक गहन प्रतीकात्मक संरचना का निर्माण करते हैं, जिसमें प्रेम, भक्ति और प्रकृति एक–दूसरे में समाहित होकर संयोग–श्रृंगार की उच्चतम अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं।

7. तीनों चित्रकला शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी लघु चित्रकला शैलियाँ भारतीय कला परंपरा की तीन प्रमुख धाराएँ हैं, जिनमें संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति भिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक और सौंदर्यात्मक संदर्भों में विकसित हुई है। यद्यपि इन तीनों शैलियों में प्रेम, मिलन और सौंदर्य की केंद्रीय भावना समान है, फिर भी उनकी दृश्य भाषा, प्रतीकात्मक संरचना और शैलीगत विशेषताएँ एक–दूसरे से स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। इस खंड में इन तीनों शैलियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तुलनात्मक सारणी 1: विषय–वस्तु की तुलना

पहलू	राजस्थानी चित्रकला	मुगल चित्रकला	पहाड़ी चित्रकला
मुख्य विषय	राधा–कृष्ण भक्ति प्रेम, नायक–नायिका	दरबारी प्रेम, शाही जीवन	राधा–कृष्ण का आध्यात्मिक प्रेम

प्रेम का स्वरूप	भावनात्मक एवं भक्ति–प्रधान	नियंत्रित एवं शाही	कोमल एवं आध्यात्मिक
उद्देश्य	भक्ति और सौंदर्य	शक्ति और सौंदर्य	भक्ति और प्रकृति–सम्मिलन

7.1 विषय–वस्तु की समानताएँ और भिन्नताएँ

तीनों शैलियों में संयोग–श्रृंगार का मूल भाव प्रेम और सौंदर्य ही है, परंतु उसकी अभिव्यक्ति भिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में होती है। राजस्थानी चित्रकला में यह प्रेम अधिक धार्मिक और भक्ति–प्रधान है, जबकि मुगल चित्रकला में यह दरबारी संस्कृति और शाही सौंदर्य से जुड़ा हुआ है। पहाड़ी चित्रकला में यह प्रेम प्रकृति और आध्यात्मिकता के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ जाता है। समानता यह है कि सभी शैलियाँ मानवीय भावनाओं को दृश्य प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करती हैं, जबकि भिन्नता उनके दार्शनिक आधार और सामाजिक संदर्भ में निहित है।

तुलनात्मक सारणी 2: रंग एवं संरचना

पहलू	राजस्थानी	मुगल	पहाड़ी
रंग योजना	चमकीले और प्रतीकात्मक रंग	प्राकृतिक एवं संतुलित रंग	सौम्य और कोमल रंग
संरचना	सपाट (थ्संज बवउचवेपजपवद)	यथार्थवादी और संतुलित	लयात्मक और काव्यात्मक
प्रकाश का प्रयोग	प्रतीकात्मक	यथार्थवादी छाया–प्रकाश	प्राकृतिक और वातावरणीय
दृश्य प्रभाव	भावनात्मक तीव्रता	शाही संतुलन	सौम्य भावनात्मकता

7.2 रंग योजना और संरचना का तुलनात्मक अध्ययन

राजस्थानी चित्रकला में रंगों का प्रयोग अत्यंत उज्ज्वल और प्रतीकात्मक होता है, जो भावनाओं की तीव्रता को दर्शाता है। मुगल चित्रकला में रंग योजना अधिक प्राकृतिक और यथार्थवादी होती है, जिसमें संतुलन और अनुपात पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पहाड़ी चित्रकला में रंग अत्यंत कोमल और प्राकृतिक होते हैं, जो वातावरण की शांति और भावनात्मक गहराई को दर्शाते हैं। संरचना के स्तर पर राजस्थानी चित्रकला अधिक सपाट होती है, मुगल चित्रकला त्रिआयामी प्रभाव के निकट होती है, जबकि पहाड़ी चित्रकला में लयात्मकता और काव्यात्मक प्रवाह देखा जाता है।

तुलनात्मक सारणी 3: प्रतीकात्मकता

प्रतीकात्मक तत्व	राजस्थानी	मुगल	पहाड़ी
प्रकृति	प्रतीकात्मक पृष्ठभूमि	संरचित उद्यान	जीवंत और भावनात्मक
स्थापत्य	महल और हवेलियाँ	चारबाग, झरोखे	सीमित, प्राकृतिक
मानवीय भाव	तीव्र और आदर्शीकृत	नियंत्रित और यथार्थवादी	सूक्ष्म और काव्यात्मक
प्रतीकों का प्रयोग	धार्मिक–भक्ति प्रतीक	शाही–सांस्कृतिक प्रतीक	आध्यात्मिक–प्राकृतिक प्रतीक

7.3 प्रकृति, स्थापत्य और मानवीय भावों के प्रतीक

प्रकृति तीनों शैलियों में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति का केंद्रीय तत्व है, परंतु इसकी भूमिका अलग–अलग है। राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति प्रतीकात्मक पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है, जबकि मुगल चित्रकला में यह संरचित

उद्यानों के माध्यम से नियंत्रित सौंदर्य प्रस्तुत करती है। पहाड़ी चित्रकला में प्रकृति स्वयं भावनात्मक अभिव्यक्ति का हिस्सा बन जाती है।

स्थापत्य मुगल चित्रकला में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहाँ महल और चारबाग प्रेम के लिए नियंत्रित वातावरण प्रदान करते हैं। इसके विपरीत राजस्थानी चित्रकला में स्थापत्य अधिक सजावटी और प्रतीकात्मक है, जबकि पहाड़ी चित्रकला में इसका प्रभाव न्यूनतम होता है।

मानवीय भावों के संदर्भ में राजस्थानी चित्रकला में भावनाएँ अत्यधिक नाटकीय और प्रतीकात्मक हैं, मुगल चित्रकला में वे नियंत्रित और संतुलित हैं, जबकि पहाड़ी चित्रकला में वे अत्यंत सूक्ष्म और काव्यात्मक रूप में प्रकट होती हैं। इस प्रकार तीनों शैलियाँ संयोग–श्रृंगार की एक ही भावना को भिन्न–भिन्न सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं।

8. संयोग–श्रृंगार के प्रमुख दृश्य प्रतीक

भारतीय लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति केवल भावनात्मक या कथात्मक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गहन प्रतीकात्मक प्रणाली के माध्यम से प्रस्तुत होती है। राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी चित्रकला शैलियों में कलाकारों ने विभिन्न दृश्य प्रतीकों का उपयोग कर प्रेम, मिलन और सौंदर्य की अवस्थाओं को बहुस्तरीय अर्थ प्रदान किए हैं। ये प्रतीक न केवल दृश्य सौंदर्य को बढ़ाते हैं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक अर्थों को भी अभिव्यक्त करते हैं।

8.1 कमल, उद्यान, रात्रि और चंद्रमा

कमल भारतीय कला में पवित्रता, सौंदर्य और आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक माना जाता है। संयोग–श्रृंगार के संदर्भ में यह प्रेम की शुद्धता और कोमलता को दर्शाता है। उद्यान , विशेषकर मुगल चित्रकला में चारबाग परंपरा, प्रेम और सौंदर्य के लिए एक नियंत्रित और आदर्श वातावरण का प्रतीक है, जहाँ प्रकृति और मानव भावनाएँ संतुलित रूप में उपस्थित होती हैं।

रात्रि और चंद्रमा संयोग–श्रृंगार की कोमल और रहस्यमय भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। रात्रि का शांत वातावरण प्रेम की गोपनीयता और अंतरंगता को दर्शाता है, जबकि चंद्रमा सौम्यता, शीतलता और भावनात्मक संतुलन का प्रतीक है। पहाड़ी चित्रकला में यह संयोजन विशेष रूप से काव्यात्मक वातावरण निर्मित करता है **(Archer, 1973)**।

8.2 नायक–नायिका, दृष्टि और देह–भंगिमा

नायक–नायिका संयोग–श्रृंगार के केंद्रिय पात्र हैं, जिनके माध्यम से प्रेम और मिलन की भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। राजस्थानी चित्रकला में ये पात्र अधिक आदर्शीकृत और प्रतीकात्मक रूप में दिखाई देते हैं, जबकि मुगल चित्रकला में वे यथार्थवादी और दरबारी सौंदर्य के अनुरूप प्रस्तुत किए जाते हैं। पहाड़ी चित्रकला में यह संबंध अत्यंत सूक्ष्म और भावनात्मक रूप से कोमल होता है।

दृष्टि इस संदर्भ में सबसे शक्तिशाली दृश्य प्रतीक है, जो बिना शब्दों के प्रेम और आकर्षण को व्यक्त करता है। आँखों का संपर्क भावनात्मक संवाद का माध्यम बनता है। देह–भंगिमा प्रेम की निकटता, आकर्षण और भावनात्मक स्थिति को दर्शाती है। झुकाव, आलिंगन और कोमल मुद्राएँ संयोग–श्रृंगार की तीव्रता को बढ़ाती हैं **(Goswamy, 1999)**।

8.3 वस्त्र, आभूषण और रंगों की प्रतीकात्मकता

वस्त्र और आभूषण संयोग–श्रृंगार में सामाजिक स्थिति, सौंदर्य और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक हैं। मुगल चित्रकला में शाही वस्त्र और आभूषण अत्यंत विस्तृत और परिष्कृत रूप में दिखाई देते हैं, जो शक्ति और वैभव का संकेत देते हैं। राजस्थानी चित्रकला में वस्त्र अधिक रंगीन और प्रतीकात्मक होते हैं, जबकि पहाड़ी चित्रकला में वे कोमल और प्राकृतिक रंगों से युक्त होते हैं।

रंगों की प्रतीकात्मकता इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। लाल रंग प्रेम और ऊर्जा का प्रतीक है, पीला दिव्यता और आनंद का, नीला शांति और आध्यात्मिकता का, जबकि हरा प्रकृति और संतुलन का प्रतीक माना जाता है। इन

रंगों का उपयोग संयोग–श्रृंगार की भावनात्मक गहराई को बढ़ाने के लिए किया जाता है। रंग केवल दृश्य आकर्षण नहीं हैं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक अर्थों के वाहक भी हैं **(Beach, 2011)**।

9. प्रतिमानात्मक विश्लेषण

प्रतिमानात्मक विश्लेषण का उद्देश्य विभिन्न कला–परंपराओं में प्रयुक्त प्रतीकों के स्थायी और आवर्ती पैटर्न की पहचान करना है। इस शोध में राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति को एक प्रतीकात्मक संरचना के रूप में देखा गया है, जहाँ समान भावनाएँ अलग–अलग दृश्य प्रतिमानों के माध्यम से व्यक्त होती हैं। यह विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि प्रेम, मिलन और सौंदर्य जैसे भाव विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में भिन्न रूपों में पुनः प्रस्तुत होते हैं, किंतु उनकी अंतर्निहित संरचना समान रहती है।

तुलनात्मक सारणी 4: संयोग–श्रृंगार के स्थायी प्रतिमान

प्रतीकात्मक तत्व	राजस्थानी चित्रकला	मुगल चित्रकला	पहाड़ी चित्रकला
प्रेम का स्वरूप	भक्ति–आधारित और भावनात्मक	शाही और नियंत्रित	आध्यात्मिक और कोमल
नायक–नायिका संबंध	आदर्शीकृत और प्रतीकात्मक	यथार्थवादी और औपचारिक	भावनात्मक और सूक्ष्म
प्रकृति की भूमिका	प्रतीकात्मक पृष्ठभूमि	संरचित उद्यान प्रणाली	जीवंत सहचर
दृष्टि–संवाद	तीव्र और नाटकीय	नियंत्रित और संयमित	सूक्ष्म और काव्यात्मक
रंगों का प्रयोग	उज्ज्वल और प्रतीकात्मक	संतुलित और प्राकृतिक	कोमल और सौम्य

9.1 प्रतीकों के स्थायी प्रतिमान

तीनों चित्रकला शैलियों में कुछ ऐसे प्रतीकात्मक प्रतिमान पाए जाते हैं जो बार–बार दोहराए जाते हैं और संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति को संरचित करते हैं। इनमें नायक–नायिका का मिलन, प्रकृति का सौंदर्यपूर्ण उपयोग, चंद्रमा और रात्रि का वातावरण तथा दृष्टि–संवाद प्रमुख हैं।

राजस्थानी चित्रकला में यह प्रतिमान अधिक धार्मिक और भक्ति–प्रधान रूप में दिखाई देता है, जहाँ राधा–कृष्ण का प्रेम दिव्यता का प्रतीक बन जाता है। मुगल चित्रकला में यही प्रतिमान शाही अनुशासन और सौंदर्यात्मक संतुलन में परिवर्तित हो जाता है। पहाड़ी चित्रकला में यह प्रतिमान प्रकृति और आध्यात्मिकता के साथ घुल–मिल जाता है, जिससे प्रेम एक काव्यात्मक अनुभव बन जाता है।

इन स्थायी प्रतिमानों से यह स्पष्ट होता है कि संयोग–श्रृंगार केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक संरचना है जो विभिन्न रूपों में पुनः निर्मित होती रहती है।

तुलनात्मक सारणी 5: शैलीगत अभिव्यक्ति का प्रतिमानात्मक विश्लेषण

विश्लेषण आयाम	राजस्थानी	मुगल	पहाड़ी
सौंदर्य दृष्टिकोण	अलंकारिक और भावनात्मक	यथार्थवादी और संरचित	काव्यात्मक और सूक्ष्म
प्रतीकात्मकता	उच्च स्तर की धार्मिकता	दरबारी संस्कृति आधारित	प्रकृति–आधारित आध्यात्मिकता
दृश्य संरचना	सपाट और प्रतीकात्मक	त्रिआयामी और संतुलित	लयात्मक और प्राकृतिक
भावनात्मक तीव्रता	अत्यधिक नाटकीय	नियंत्रित और संयमित	कोमल और गहन

दर्शक अनुभव	भक्तिपूर्ण सहभागिता	सौंदर्यात्मक अवलोकन	भावनात्मक आत्मीयता

9.2 शैलीगत भिन्नताओं में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति

राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी चित्रकला में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति शैलीगत रूप से भिन्न होते हुए भी एक साझा भावात्मक आधार पर स्थित है। राजस्थानी शैली में यह अभिव्यक्ति अधिक प्रतीकात्मक और धार्मिक होती है, जहाँ प्रेम को दिव्यता से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। मुगल शैली में यह प्रेम अधिक नियंत्रित, औपचारिक और शाही सौंदर्य के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है, जिसमें संरचना और यथार्थवाद की प्रधानता होती है। पहाड़ी शैली में यह प्रेम प्रकृति और भक्ति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़कर एक काव्यात्मक अनुभव बन जाता है।

यह भिन्नता यह दर्शाती है कि संयोग–श्रृंगार एक स्थिर अवधारणा नहीं है, बल्कि यह विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में रूपांतरित होने वाला एक गतिशील सौंदर्यात्मक प्रतिमान है। इन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय लघु चित्रकला में प्रेम केवल दृश्य विषय नहीं, बल्कि एक बहुस्तरीय प्रतीकात्मक और दार्शनिक संरचना है।

10. निष्कर्ष एवं प्रमुख निष्पत्तियाँ

यह शोध राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार के दृश्य प्रतीकों के प्रतिमानात्मक अध्ययन पर आधारित था, जिसका उद्देश्य इन तीनों प्रमुख चित्रशैलियों में प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति के स्वरूप, प्रतीकात्मक संरचना तथा शैलीगत भिन्नताओं को समझना था। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संयोग–श्रृंगार भारतीय लघु चित्रकला में केवल एक विषयगत तत्व नहीं, बल्कि एक गहन सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक संरचना है, जो विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में विविध रूपों में अभिव्यक्त होती है।

इस शोध की प्रमुख निष्पत्तियाँ यह दर्शाती हैं कि तीनों चित्रकला शैलियों में संयोग–श्रृंगार की मूल भावना समान होते हुए भी उसकी दृश्य अभिव्यक्ति भिन्न है। राजस्थानी चित्रकला में यह अभिव्यक्ति भक्ति–प्रधान, प्रतीकात्मक और भावनात्मक रूप में दिखाई देती है, जहाँ राधा–कृष्ण की लीला प्रेम और दिव्यता का संगम प्रस्तुत करती है। मुगल चित्रकला में संयोग–श्रृंगार अधिक यथार्थवादी, नियंत्रित और दरबारी सौंदर्य से युक्त है, जिसमें प्रेम को एक शाही और संरचित अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वहीं पहाड़ी चित्रकला में यह भाव अत्यंत कोमल, काव्यात्मक और प्रकृति–आधारित रूप में विकसित होता है, जहाँ प्रेम और भक्ति का अद्वैत संबंध स्पष्ट रूप से उभरता है।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि दृश्य प्रतीकोंकृजैसे कमल, चंद्रमा, उद्यान, नायक–नायिका की दृष्टि, देह–भंगिमा तथा रंगों की प्रतीकात्मकताकृतीनों शैलियों में संयोग–श्रृंगार की अभिव्यक्ति के केंद्रीय माध्यम हैं। ये प्रतीक केवल सजावटी तत्व नहीं हैं, बल्कि गहरे भावात्मक और दार्शनिक अर्थों को संप्रेषित करने वाले माध्यम हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से कलाकारों ने प्रेम को बहुस्तरीय अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रतिमानात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि इन तीनों परंपराओं में कुछ स्थायी दृश्य पैटर्न पाए जाते हैं, जो विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में पुनः संरचित होते रहते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार एक गतिशील और विकसित होने वाली सौंदर्यात्मक अवधारणा है।

अंततः यह शोध यह स्थापित करता है कि राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी लघु चित्रकला में संयोग–श्रृंगार न केवल सौंदर्य और प्रेम की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक चेतना, दर्शन और प्रतीकात्मक सोच का भी महत्वपूर्ण प्रतिबिंब है। यह अध्ययन कला इतिहास, सौंदर्यशास्त्र और दृश्य संस्कृति के क्षेत्र में एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो भविष्य के शोधों के लिए एक आधारभूत संरचना तैयार करता है।

संदर्भ सूची

1. Archer, W. G. (1973). *Indian painting in the Punjab Hills*. Oxford University Press.
2. Beach, M. C. (2011). *Mughal and Rajput painting*. Cambridge University Press.

3. Bharata Muni. (2000). *Natyashastra* (A. Boardman, Trans.). (Original work composed ca. 200 BCE–200 CE)
4. Chaitanya, K. (1982). *A history of Indian painting: The Rajasthani tradition*. Abhinav Publications.
5. Coomaraswamy, A. K. (2004). *The transformation of nature in art*. Dover Publications.
6. Denzin, N. K., & Lincoln, Y. S. (2018). *The SAGE handbook of qualitative research*. SAGE Publications.
7. Fischer, E., & Goswamy, B. N. (2014). *Pahari paintings: The mystical tradition*. Artibus Asiae.
8. Goswamy, B. N. (1999). *The spirit of Indian painting*. Penguin Books India.
9. Losty, J. P. (2010). *Mughal India: Art, culture and empire*. British Library Publishing.
10. Panofsky, E. (1955). *Meaning in the visual arts*. University of Chicago Press.
11. Raghavan, V. (1973). *Some concepts of aesthetics in Sanskrit poetics*. University of Madras.
12. Sundar, R. (2003). *Rajput painting: Romantic, divine and courtly traditions*. Roli Books.
13. Welch, S. C. (1976). *Imperial Mughal painting*. George Braziller.